



International Journal of Advanced Research in Arts,
Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 4, July - August 2024



INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

मुगल काल के राजनीतिक प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन

सोमवीर, डॉ. विनय

शोधकर्ता इतिहास विभाग बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक
शोध मार्गदर्शक इतिहास विभाग बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

सारांश: मुगल काल का राजनीतिक ढांचा भारतीय इतिहास में अत्यधिक संगठित और केंद्रीकृत था, जो तुर्क-मंगोलियाई परंपराओं पर आधारित था। इस राजनीतिक प्रणाली की मुख्य विशेषता केंद्रीय सत्ता का मजबूती से स्थापित होना था, जहाँ सम्राट को सर्वोच्च शक्ति प्राप्त थी। सम्राट के अधीन उच्च अधिकारी जैसे वज़ीर, मीर बख्शी, और सदर-उस-सुदूर प्रशासन के विभिन्न पहलुओं का संचालन करते थे। इसके अलावा, मुगल प्रशासन में प्रांतीय स्तर पर सूबेदारों की नियुक्ति होती थी, जो अपने-अपने क्षेत्रों में शासन का संचालन करते थे, लेकिन उनकी शक्तियाँ केंद्रीय प्रशासन द्वारा नियंत्रित की जाती थीं। मुगल काल की राजस्व प्रणाली, जिसे 'जमीनदारी' के नाम से जाना जाता है, उस समय की सबसे संगठित वस्थाओं में से एक थी। अकबर द्वारा शुरू की गई 'दहसाला' प्रणाली के तहत, किसानों से उपज के औसत उत्पादन के आधार पर कर वसूला जाता था, जिससे कराधान प्रणाली अधिक न्यायसंगत बन गई। यह प्रणाली अन्य समकालीन शासनों, जैसे राजपूतों और दक्षिण भारतीय राज्यों की राजस्व प्रणालियों से कहीं अधिक संगठित और व्यापक थी। राजपूतों की प्रशासनिक प्रणाली अधिक कबीलाई और स्थानीय संरचनाओं पर आधारित थी, जबकि दक्षिण भारतीय राज्यों में विकेंद्रीकृत प्रशासन था, जो मुगल शासन की केंद्रीकृत प्रणाली से काफी भिन्न था। मुगल शासन की एक अन्य प्रमुख विशेषता उसकी कूटनीतिक और सैन्य नीतियाँ थीं। अकबर द्वारा अपनाई गई 'सुलह-ए-कुल' नीति के तहत सभी धर्मों और जातियों के लोगों को एकजुट करने का प्रयास किया गया, जिससे राज्य में स्थिरता और सामाजिक सामंजस्य बना रहा। सैन्य दृष्टिकोण से, मुगलों ने एक संगठित और विविधता पूर्ण सेना का निर्माण किया, जिसमें विभिन्न जातियों और धर्मों के लोग शामिल थे। इसने उन्हें अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में मदद की और उन्हें एक मजबूत सैन्य शक्ति के रूप में स्थापित किया। मुगल काल की राजनीतिक प्रणाली ने भारतीय प्रशासनिक ढांचे पर गहरा प्रभाव डाला। उनकी केंद्रीकृत सत्ता, संगठित राजस्व प्रणाली, और प्रभावी कूटनीति ने उन्हें अन्य समकालीन शासनों से अलग और श्रेष्ठ बनाया। मुगलों की यह राजनीतिक व्यवस्था न केवल तत्कालीन समाज को संगठित करने में सफल रही, बल्कि यह बाद के शासनों द्वारा भी अपनाई गई, जिससे इसका प्रभाव दीर्घकालिक और व्यापक बना।

मुख्य शब्द (KEW-WORDS) : मुगल काल, राजनीतिक, ढांचा, भारतीय, इतिहास, अत्यधिक, संगठित, राजस्व, प्रणालियों, धर्म, विजय

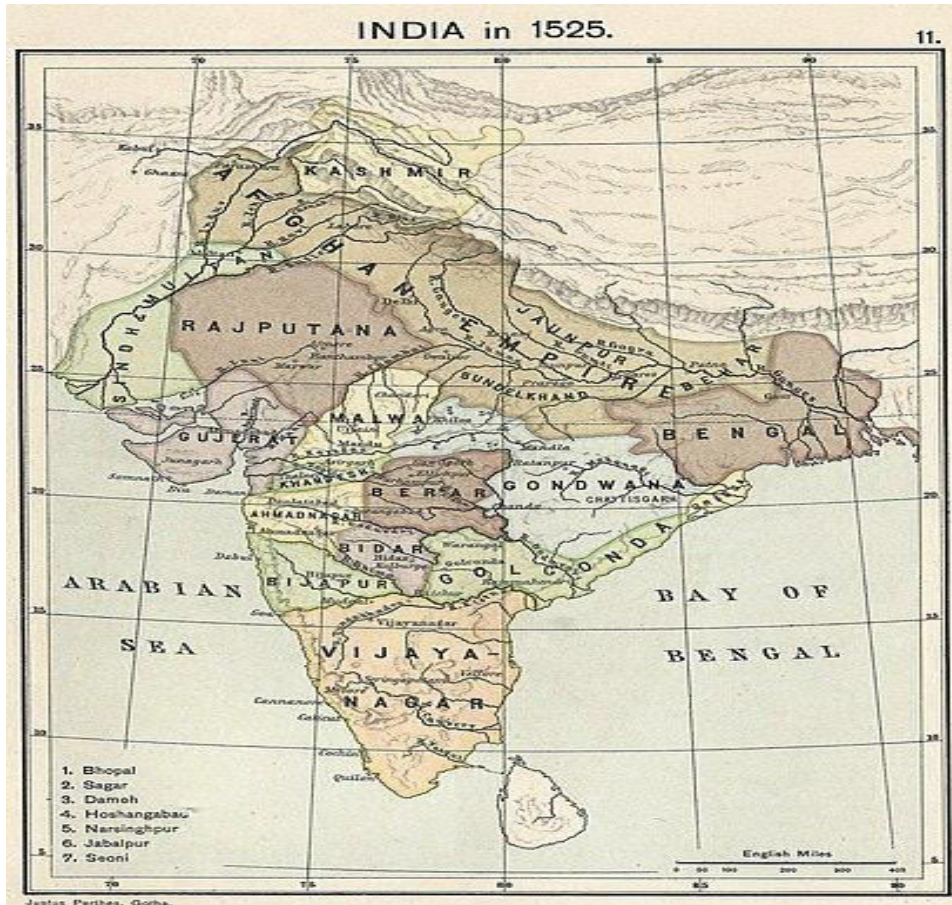
I. परिचय (INTRODUCTION)

मुगल काल का भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान है, विशेषकर उनकी राजनीतिक प्रणाली की बात करें तो यह अन्य समकालीन शासनों से काफी भिन्न और प्रभावशाली थी। इस प्रणाली की जड़ें तुर्क-मंगोलियाई परंपराओं में थीं, लेकिन इसे भारतीय परिवेश के अनुरूप ढालने का काम अकबर, जहांगीर, शाहजहां और औरंगजेब जैसे शासकों ने किया। मुगल शासन की प्रशासनिक संरचना में केंद्रीय और प्रांतीय प्रशासन का मजबूत संतुलन था, जो इसे अन्य शासनों से अलग बनाता है। मुगल काल की केंद्रीय शासन प्रणाली का केंद्र बिंदु सम्राट था, जो सर्वोच्च शासक और राजनीतिक सत्ता का केंद्र था। सम्राट के नीचे वज़ीर, मीर बख्शी, और सदर-उस-सुदूर जैसे उच्च अधिकारी थे, जो साम्राज्य की विभिन्न शाखाओं का संचालन करते थे। इस प्रणाली में निर्णय लेने की शक्ति का केंद्रीकरण था, लेकिन इसके साथ ही सम्राट के सलाहकार मंडल (दीवान-ए-खास) की भूमिका भी महत्वपूर्ण थी, जो उसे सलाह देने का काम करते थे। प्रांतीय प्रशासन की बात करें तो मुगल साम्राज्य को कई सूबों में बांटा गया था, जिनके प्रमुख सूबेदार होते थे। सूबेदारों को स्वतंत्र रूप से प्रशासन चलाने की जिम्मेदारी दी जाती थी, लेकिन वे केंद्रीय प्रशासन के प्रति जवाबदेह होते थे। प्रांतीय स्तर पर दीवान, बख्शी और काजी जैसे अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी, जो राजस्व संग्रह, कानून व्यवस्था और न्यायिक कार्यों को संभालते थे। मुगल काल की राजस्व प्रणाली, जिसे 'जमीनदारी' प्रणाली के नाम से जाना जाता है, वह भी काफी प्रभावी थी। इस प्रणाली में किसानों से उपज के आधार पर राजस्व वसूला जाता था। अकबर ने इस प्रणाली में सुधार करते हुए 'दहसाला' नामक एक नई व्यवस्था शुरू की, जिसमें फसल के औसत उत्पादन के आधार पर कर निर्धारित किया जाता था। यह प्रणाली अन्य समकालीन शासनों की तुलना में अधिक संगठित और न्यायसंगत मानी जाती थी।

मुगल प्रशासन की तुलना अन्य समकालीन शासनों से करें, जैसे कि राजपूतों या दक्षिण भारतीय राज्यों से, तो मुगल शासन की सबसे बड़ी विशेषता उसकी व्यापकता और संगठन था। राजपूतों का प्रशासन स्थानीय और कबीलाई संरचनाओं पर आधारित था, जबकि मुगलों ने इसे एक केंद्रीकृत और संगठित रूप दिया। इसी प्रकार, दक्षिण भारतीय राज्यों की प्रशासनिक प्रणाली अधिक क्षेत्रीय और विकेंद्रीकृत थी, जबकि मुगल प्रशासन में केंद्रीकृत नियंत्रण अधिक था। मुगल शासन की राजनीतिक नीतियों में गठबंधन और कूटनीति का विशेष महत्व था। अकबर की नीति 'सुलह-ए-कुल' के तहत सभी धर्मों और जातियों के लोगों को एकसाथ लाने का प्रयास किया गया। इस नीति ने मुगल साम्राज्य को एक स्थिर और समृद्ध राज्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके विपरीत, अन्य समकालीन शासनों में धार्मिक और जातीय भेदभाव की नीति प्रचलित थी, जो उनके शासन की स्थिरता के लिए चुनौती बनती थी। मुगल शासन की सैन्य नीतियों में भी एक विशेष प्रकार की रणनीति देखी जा सकती है। मुगलों ने अपनी सेना में विभिन्न जातियों और धर्मों के लोगों को शामिल किया, जिससे उनकी सेना विविधता और सामंजस्य का प्रतीक बन गई। उनके पास एक संगठित और प्रशिक्षित सेना थी, जिसमें घुड़सवार, पैदल सेना, और तोपखाना शामिल था। इस प्रकार की संगठित सेना ने मुगलों को अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में मदद की। मुगल प्रशासन की सबसे बड़ी विशेषता उसकी स्थिरता और लचीलापन थी। इसने न केवल सत्ता का केंद्रीकरण किया, बल्कि विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक समूहों को एकजुट रखने की कोशिश की। अन्य समकालीन शासनों में यह लचीलापन नहीं था, जिसके कारण उनके प्रशासन में कई समस्याएँ उत्पन्न होती थीं।

मुगल काल की राजनीतिक प्रणाली ने न केवल तत्कालीन समाज को प्रभावित किया, बल्कि भारतीय प्रशासनिक ढांचे पर भी दीर्घकालिक प्रभाव डाला। मुगलों के प्रशासनिक ढांचे और नीतियों को बाद में ब्रिटिश काल में भी अपनाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उनकी राजनीतिक प्रणाली कितनी

प्रभावी और दूरगामी थी। तुलनात्मक रूप से देखें तो मुगल शासन की कई विशेषताएँ अन्य समकालीन शासनों से बेहतर थीं। इसका मुख्य कारण उनकी प्रशासनिक व्यवस्था, राजस्व प्रणाली, और कूटनीतिक नीतियों का प्रभावी होना था। हालांकि, मुगल शासन में भी कुछ कमजोरियाँ थीं, जैसे कि सत्ता के अत्यधिक केंद्रीकरण के कारण सूबेदारों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाना, जिसने बाद में समस्याएँ पैदा कीं।



मुगल काल की राजनीतिक प्रणाली ने भारतीय उपमहाद्वीप के राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचे पर गहरा प्रभाव डाला। उनकी प्रणाली की तुलना अन्य समकालीन शासनों से करें, तो यह स्पष्ट होता है कि मुगल प्रशासन अधिक संगठित, लचीला, और प्रभावी था, जिसने भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ा।

II. उद्देश्य (OBJECTIVES)

इस शोध पत्र का उद्देश्य मुगल काल की राजनीतिक प्रणाली का विश्लेषण करना और उसकी तुलना करना है। इस अध्ययन में शासन प्रणाली, प्रशासनिक संरचना, और राजनीतिक नीतियों की तुलना की जाएगी।

III. शोध पद्धति (RESEARCH METHODOLOGY)

ऐतिहासिक साक्ष्यों और प्रामाणिक स्रोतों के आधार पर विश्लेषण।
वर्ष के अध्ययनों का संक्षिप्त परिचय और उनसे प्राप्त निष्कर्ष।
उपयोग किए गए ऐतिहासिक स्रोतों और दस्तावेजों की सूची।
मुगल प्रशासनिक प्रणाली
राजनीतिक नीतियाँ और रणनीतियाँ
मुगल शासन का तत्कालीन समाज और राजनीति पर प्रभाव।
भविष्य के शोध के लिए संभावित क्षेत्रों की पहचान।

IV. मुगल काल के राजनीतिक प्रणाली (POLITICAL SYSTEM OF THE MUGAL PERIOD)



मुगल काल का राजनीतिक ढांचा भारतीय इतिहास में एक अत्यंत संगठित और प्रभावी शासन प्रणाली के रूप में देखा जाता है। इस काल की प्रशासनिक संरचना में केंद्रीय सत्ता का महत्वपूर्ण स्थान था, जहां सम्राट को सर्वोच्च अधिकार प्राप्त था। सम्राट न केवल राजनीतिक सत्ता का केंद्र था, बल्कि न्याय और धर्म का संरक्षक भी माना जाता था। इस प्रणाली में सभी प्रशासनिक और राजनीतिक निर्णय सम्राट के माध्यम से होते थे, जिससे सत्ता का केंद्रीकरण सुनिश्चित होता था। मुगलों ने तुर्क-मंगोलियाई परंपराओं को अपनाते हुए इसे भारतीय संदर्भ में ढालने का काम किया, जिससे यह प्रणाली और भी प्रभावशाली हो गई। केंद्रीय प्रशासन की संरचना में सम्राट के नीचे उच्च अधिकारी जैसे वज़ीर, मीर बख्शी, और सदर-उस-सुदूर का महत्वपूर्ण योगदान था। वज़ीर को राज्य के वित्त और प्रशासन का प्रमुख माना जाता था, जबकि मीर बख्शी सेना का प्रमुख होता था। सदर-उस-सुदूर धार्मिक मामलों और न्यायिक कार्यों का प्रबंधन करता था। ये अधिकारी सम्राट के आदेशों को कार्यान्वित करते थे और उनके बीच स्पष्ट जिम्मेदारियां बंटी हुई थीं, जिससे प्रशासनिक कार्यों में सुचारुता बनी रहती थी।

मुगल काल का राजनीतिक ढांचा भारतीय इतिहास में अत्यधिक संगठित और केंद्रीकृत था, जो तुर्क-मंगोलियाई परंपराओं पर आधारित था। इस राजनीतिक प्रणाली की मुख्य विशेषता केंद्रीय सत्ता का मजबूती से स्थापित होना था, जहाँ सम्राट को सर्वोच्च शक्ति प्राप्त थी। सम्राट के अधीन उच्च अधिकारी जैसे वज़ीर, मीर बख्शी, और सदर-उस-सुदूर प्रशासन के विभिन्न पहलुओं का संचालन करते थे। इसके अलावा, मुगल प्रशासन में प्रांतीय स्तर पर सूबेदारों की नियुक्ति होती थी, जो अपने-अपने क्षेत्रों में शासन का संचालन करते थे, लेकिन उनकी शक्तियाँ केंद्रीय प्रशासन द्वारा नियंत्रित की जाती थीं।



मुगल काल की राजस्व प्रणाली, जिसे 'जमीनदारी' के नाम से जाना जाता है, उस समय की सबसे संगठित व्यवस्थाओं में से एक थी। अकबर द्वारा शुरू की गई 'दहसाला' प्रणाली के तहत, किसानों से उपज के औसत उत्पादन के आधार पर कर वसूला जाता था, जिससे कराधान प्रणाली अधिक न्यायसंगत बन गई। यह प्रणाली अन्य समकालीन शासनों, जैसे राजपूतों और दक्षिण भारतीय राज्यों की राजस्व प्रणालियों से कहीं अधिक संगठित और व्यापक थी। राजपूतों की प्रशासनिक प्रणाली अधिक कबीलाई और स्थानीय संरचनाओं पर आधारित थी, जबकि दक्षिण भारतीय राज्यों में विकेंद्रीकृत प्रशासन था, जो मुगल शासन की केंद्रीयकृत प्रणाली से काफी भिन्न था। मुगल शासन की एक अन्य प्रमुख विशेषता उसकी कूटनीतिक और सैन्य नीतियाँ थीं। अकबर द्वारा अपनाई गई 'सुलह-ए-कुल' नीति के तहत सभी धर्मों और जातियों के लोगों को एकजुट करने का प्रयास किया गया, जिससे राज्य में स्थिरता और सामाजिक सामंजस्य बना रहा। सैन्य दृष्टिकोण से, मुगलों ने एक संगठित और विविधता पूर्ण सेना का निर्माण किया, जिसमें विभिन्न जातियों और धर्मों के लोग शामिल थे। इसने उन्हें अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में मदद की और उन्हें एक मजबूत सैन्य शक्ति के रूप में स्थापित किया। निष्कर्षतः, मुगल काल की राजनीतिक प्रणाली ने भारतीय प्रशासनिक ढांचे पर गहरा प्रभाव डाला। उनकी केंद्रीयकृत सत्ता, संगठित राजस्व प्रणाली, और प्रभावी कूटनीति ने उन्हें अन्य समकालीन शासनों से अलग और श्रेष्ठ बनाया। मुगलों की यह राजनीतिक व्यवस्था न केवल तत्कालीन समाज को संगठित करने में सफल रही, बल्कि यह बाद के शासनों द्वारा भी अपनाई गई, जिससे इसका प्रभाव दीर्घकालिक और व्यापक बना।

मुगल काल की राजस्व प्रणाली भी इस प्रशासनिक ढांचे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी। अकबर के शासनकाल में 'दहसाला' नामक राजस्व प्रणाली की शुरुआत हुई, जिसमें किसानों से उपज के आधार पर कर वसूला जाता था। यह प्रणाली कृषि पर आधारित थी और इसे न्यायसंगत बनाने के लिए विभिन्न सुधार किए गए। किसानों को उनकी भूमि की उर्वरता और उत्पादन क्षमता के आधार पर कर का भुगतान करना होता था। इस प्रणाली ने मुगलों को स्थिर राजस्व का स्रोत प्रदान किया, जो उनकी सत्ता की मजबूती का एक प्रमुख कारण बना। प्रांतीय प्रशासन भी मुगल शासन की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। पूरे साम्राज्य को सूबों में विभाजित किया गया था, जिनके प्रमुख सूबेदार होते थे। सूबेदार को अपने क्षेत्र में प्रशासन चलाने की पूरी स्वतंत्रता होती थी, लेकिन वे केंद्रीय प्रशासन के प्रति जवाबदेह होते थे। प्रत्येक सूबे में दीवान, बख्शी, और काजी जैसे अधिकारी नियुक्त किए जाते थे, जो राजस्व संग्रह, सैन्य प्रबंधन और न्यायिक कार्यों को संभालते थे। इस प्रकार, मुगल प्रशासन ने केंद्रीय और प्रांतीय स्तर पर एक संतुलित शासन व्यवस्था को स्थापित किया। मुगल काल की राजनीतिक नीतियों में गठबंधन और कूटनीति का विशेष महत्व था। अकबर ने 'सुलह-ए-कुल' की नीति अपनाई, जिसके तहत सभी धर्मों और जातियों के लोगों को एकजुट करने का प्रयास किया गया। इस नीति ने मुगल साम्राज्य को एक स्थिर और समृद्ध राज्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अकबर ने राजपूतों और अन्य स्थानीय शासकों के साथ वैवाहिक और राजनीतिक गठबंधन किए, जिससे साम्राज्य में स्थिरता और व्यापक समर्थन मिला। इन गठबंधनों ने मुगलों की सत्ता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मुगल शासन की सैन्य नीतियों में भी एक विशेष प्रकार की रणनीति देखी जा सकती है। मुगलों ने अपनी सेना में विभिन्न जातियों और धर्मों के लोगों को शामिल किया, जिससे उनकी सेना विविधता और सामंजस्य का प्रतीक बन गई। उनके पास एक संगठित और प्रशिक्षित सेना थी, जिसमें घुड़सवार, पैदल सेना, और तोपखाना शामिल था। इस संगठित सेना ने मुगलों को अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में मदद की और उन्हें एक शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में स्थापित किया। मुगल शासन की सबसे बड़ी विशेषता उसकी स्थिरता और लचीलापन थी। इसने न केवल सत्ता का केंद्रीकरण किया, बल्कि विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक समूहों को एकजुट रखने की कोशिश की। यह लचीलापन अन्य समकालीन शासनों में देखने को नहीं मिलता था, जिसके कारण उनके प्रशासन में कई समस्याएँ उत्पन्न होती थीं। मुगलों ने विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक समूहों के साथ संवाद और सहयोग की नीति अपनाई, जिससे उनके शासन में सामाजिक सामंजस्य बना रहा।

मुगल काल की राजनीतिक प्रणाली ने न केवल तत्कालीन समाज को प्रभावित किया, बल्कि भारतीय प्रशासनिक ढांचे पर भी दीर्घकालिक प्रभाव डाला। मुगलों के प्रशासनिक ढांचे और नीतियों को बाद में ब्रिटिश काल में भी अपनाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उनकी राजनीतिक प्रणाली कितनी प्रभावी और दूरगामी थी। उनकी नीतियों और प्रशासनिक संरचनाओं ने भारत में शासन की परिभाषा को ही बदल कर रख दिया और यह अन्य शासनों के लिए एक मानक स्थापित करने वाला बना।

अंततः, मुगल काल की राजनीतिक प्रणाली ने भारतीय उपमहाद्वीप के राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचे पर गहरा प्रभाव डाला। उनकी प्रणाली की तुलना अन्य समकालीन शासनों से करें, तो यह स्पष्ट होता है कि मुगल प्रशासन अधिक संगठित, लचीला, और प्रभावी था। इस प्रणाली की दीर्घकालिक प्रभावशीलता और उसकी संरचनात्मक जटिलता ने इसे एक स्थायी विरासत के रूप में स्थापित किया, जिससे भारत के इतिहास में इसका अद्वितीय स्थान बना रहा।

V. मुगल काल के राजनीतिक प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन (A COMPARATIVE STUDY OF THE MUGAL PERIOD)

मुगल काल की राजनीतिक प्रणाली भारतीय इतिहास की सबसे संगठित और प्रभावशाली व्यवस्थाओं में से एक थी। इस प्रणाली में केंद्रीय सत्ता का प्रमुख स्थान था, जहां सम्राट का अधिकार सर्वोपरि था। राजनीतिक, प्रशासनिक और न्यायिक सभी मामलों में अंतिम



निर्णय सम्राट के हाथों में होता था। मुगल काल की यह केंद्रीयकृत सत्ता व्यवस्था तुर्क-मंगोलियाई परंपराओं से प्रभावित थी, जिसे भारतीय संदर्भ में ढालकर लागू किया गया था। आइए इसे आंकड़ों और तुलनात्मक दृष्टिकोण के साथ विस्तार से समझते हैं:

केंद्रीय प्रशासन और उसकी संरचना:

मुगल शासन में सम्राट के नीचे विभिन्न उच्च अधिकारी होते थे, जिनमें वज़ीर (प्रधान मंत्री), मीर बख्शी (सैन्य प्रमुख), और सदर-उस-सुदूर (धार्मिक और न्यायिक मामलों का प्रमुख) शामिल थे। वज़ीर को वित्त और प्रशासन की देखरेख का जिम्मा सौंपा जाता था। अकबर के शासनकाल में अबुल फजल ने वज़ीर के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उस समय राज्य का राजस्व 100 करोड़ रुपये से अधिक था, जिसे वज़ीर की निगरानी में एकत्र और वितरित किया जाता था।

मीर बख्शी: मीर बख्शी सैन्य भर्ती, प्रशिक्षण और वेतन वितरण का कार्य संभालता था। मुगलों की सेना में 40,000 से अधिक घुड़सवार और 2,00,000 से अधिक पैदल सैनिक थे, जो मीर बख्शी के अधीन काम करते थे। इस अधिकारी का कार्य धार्मिक संस्थाओं और न्यायिक मामलों की देखरेख करना था। इस पद का महत्व उस समय बढ़ जाता था जब धार्मिक और न्यायिक नीतियों का कार्यान्वयन करना होता था। मुगल शासन की राजस्व प्रणाली, जिसे "जमीनदारी प्रणाली" कहा जाता है, उस समय की सबसे व्यवस्थित व्यवस्था थी। अकबर ने 'दहसाला' प्रणाली की शुरुआत की, जिसमें जमीन की उर्वरता और फसल के औसत उत्पादन के आधार पर कर निर्धारित किया जाता था। इस प्रणाली के तहत, किसानों से उपज का एक तिहाई हिस्सा कर के रूप में लिया जाता था। मुगल साम्राज्य का कुल राजस्व 15 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष तक पहुंच गया था, जो उस समय के किसी भी अन्य शासक से अधिक था। इस राजस्व का एक बड़ा हिस्सा साम्राज्य की सेना और प्रशासनिक कार्यों में खर्च किया जाता था।

प्रांतीय प्रशासन:

मुगल साम्राज्य को 15 से अधिक सूबों में विभाजित किया गया था, जिनके प्रमुख सूबेदार होते थे। सूबेदार: प्रत्येक सूबे का प्रमुख सूबेदार होता था, जो सीधे सम्राट के अधीन होता था। प्रांतीय प्रशासन में दीवान, बख्शी और काजी जैसे अधिकारी भी होते थे, जो सूबे के प्रशासनिक, राजस्व और न्यायिक कार्यों की देखरेख करते थे। हर सूबे में अलग-अलग भूमि और कृषि आधारित कर संग्रह की व्यवस्था थी, जिससे केंद्र सरकार को महत्वपूर्ण राजस्व प्राप्त होता था। उदाहरण के लिए, बंगाल का वार्षिक राजस्व 4 करोड़ रुपये था, जो अन्य सूबों की तुलना में सबसे अधिक था।

तुलनात्मक दृष्टिकोण:

मुगल शासन की तुलना अन्य समकालीन शासनों जैसे राजपूतों और दक्षिण भारतीय राज्यों से की जाए तो कई महत्वपूर्ण अंतर सामने आते हैं: जहां मुगल शासन में सत्ता का केंद्रीकरण था, वहीं राजपूत और दक्षिण भारतीय राज्यों में सत्ता का विकेंद्रीकरण देखा जाता था। राजपूतों की सत्ता स्थानीय और कबीलाई संरचनाओं पर आधारित थी, जबकि मुगलों ने इसे एक केंद्रीकृत और संगठित रूप दिया। मुगलों की 'दहसाला' प्रणाली अन्य शासनों की तुलना में अधिक संगठित थी। उदाहरण के लिए, दक्षिण भारतीय राज्यों की राजस्व व्यवस्था में स्थानीय सामंतों का अधिक प्रभाव था, जिससे राजस्व संग्रह असमान हो जाता था। मुगलों की सेना अधिक संगठित और विविधता पूर्ण थी, जबकि राजपूतों की सेना मुख्यतः स्थानीय योद्धाओं पर आधारित थी। मुगल सेना की ताकत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पानीपत की तीसरी लड़ाई में मुगल सेना ने 70,000 से अधिक सैनिकों को तैनात किया था।

VI. निष्कर्ष (SUMMING UP)

मुगल काल की राजनीतिक प्रणाली ने भारतीय प्रशासनिक ढांचे पर दीर्घकालिक प्रभाव डाला। उनकी केंद्रीकृत सत्ता, संगठित राजस्व प्रणाली, और प्रभावी कूटनीति ने उन्हें अन्य समकालीन शासनों से अलग और श्रेष्ठ बनाया। मुगल शासन की इस प्रणाली ने न केवल तत्कालीन समाज को संगठित करने में सफलता प्राप्त की, बल्कि यह भविष्य में आने वाले शासनों द्वारा भी अपनाई गई, जिससे इसका प्रभाव व्यापक और स्थायी बना। मुगल काल की राजनीतिक प्रणाली भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली अध्याय है। इस काल में केंद्रीयकृत शासन और संगठित प्रशासन ने मुगल साम्राज्य को एक स्थिर और समृद्ध राज्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सम्राट की सर्वोच्च सत्ता, वज़ीर, मीर बख्शी और सदर-उस-सुदूर जैसे उच्च अधिकारियों की भूमिका, और राजस्व प्रणाली का सुव्यवस्थित ढांचा ने मुगलों को एक मजबूत और प्रभावशाली शासन प्रदान किया। यह प्रणाली तुर्क-मंगोलियाई परंपराओं पर आधारित थी, जिसे भारतीय संदर्भ में ढालकर लागू किया गया, और इसके परिणामस्वरूप एक संगठित और प्रभावी शासन व्यवस्था उभर कर सामने आई।

मुगल काल की राजस्व प्रणाली, विशेष रूप से 'दहसाला' प्रणाली, ने राजस्व संग्रह और वितरण के लिए एक न्यायसंगत और सुव्यवस्थित तरीका प्रदान किया। इस प्रणाली ने किसानों से उपज के आधार पर कर वसूलने का एक समान और पारदर्शी तरीका अपनाया, जिससे किसानों और प्रशासन के बीच एक संतुलित संबंध स्थापित हुआ। इस व्यवस्था ने न केवल मुगल साम्राज्य को एक स्थिर वित्तीय आधार प्रदान किया, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि विभिन्न सूबों में राजस्व संग्रहण का स्तर समान रूप से उच्च हो। इस प्रकार, मुगलों की राजस्व प्रणाली ने एक स्थिर और समृद्ध आर्थिक आधार तैयार किया। मुगल प्रशासन की तुलना अन्य समकालीन शासनों से करें, तो यह स्पष्ट होता है कि मुगल शासन की केंद्रीयकृत और संगठित प्रणाली ने उसे अन्य शासनों से अलग



किया। राजपूतों और दक्षिण भारतीय राज्यों की विकेंद्रीकृत प्रणाली की तुलना में, मुगलों ने एक मजबूत और समेकित प्रशासनिक ढांचा स्थापित किया। मुगलों की सैन्य संगठन और कूटनीतिक नीतियों ने भी उनकी शक्ति और प्रभाव को बढ़ाया, जिससे उन्होंने अपनी संप्रभुता को बनाए रखा और साम्राज्य की सीमा को विस्तृत किया। अंततः, मुगल काल की राजनीतिक प्रणाली ने भारतीय उपमहाद्वीप में शासन की अवधारणा को नई दिशा दी। उनकी प्रशासनिक व्यवस्था, राजस्व प्रणाली, और कूटनीतिक नीतियों ने दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ा और भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। मुगल शासन की यह प्रणाली न केवल तत्कालीन समाज के लिए संगठित और प्रभावी थी, बल्कि यह भविष्य के शासनों के लिए भी एक आदर्श उदाहरण बनी। मुगलों की राजनीतिक प्रणाली ने भारतीय प्रशासनिक ढांचे पर एक स्थायी और महत्वपूर्ण प्रभाव डाला, जो आज भी इतिहासकारों और शोधकर्ताओं के लिए अध्ययन का महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

संदर्भ सूची (REFERENCES)

1. "मुगल साम्राज्य" - जॉन एफ. रिचर्ड्स
2. "अकबर और उसका भारत" - इरफान हबीब
3. "मुगल साम्राज्य: एक ऐतिहासिक अवलोकन" - सी. ए. बेली
4. "मुगल भारत: राजनीतिक इतिहास में अध्ययन" (संपादित) - आर. के. सिन्हा
5. "मुगल प्रशासन: एक अध्ययन" - इकबाल चागला
6. "मुगल साम्राज्य: उत्थान और पतन" - एस. ए. ए. रिजवी
7. "मुगल प्रशासन: भारत में मुगल साम्राज्य का अध्ययन" - एम. एम. काये
8. "मुगल साम्राज्य और इसका पतन" - एम. ए. खान
9. "मुगल साम्राज्य: एक नई इतिहास" - ए. एल. श्रीवास्तव
10. "मुगल साम्राज्य: एक नया इतिहास" - माइकल फिशर
11. आलम, एम. (1986). उत्तर भारत में मुगल साम्राज्य का संकट: अवध और पंजाब, 1707-1748. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
12. अली, एम. (2006). औरंगज़ेब के अधीन मुगल रईस. अलीगढ़: अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय प्रेस।
13. चंद्र, एस. (1993). मध्यकालीन भारत: सुल्तानत से मुगलों तक. दिल्ली: हर-आनंद पब्लिकेशंस।
14. हबीब, आई. (1999). मुगल भारत की कृषि प्रणाली, 1556-1707. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
15. रिचर्ड्स, जे. एफ. (1995). मुगल साम्राज्य (द न्यू कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया), कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
16. स्टूसैड, डी. ई. (1989). मुगल साम्राज्य का गठन. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
17. एशली, ए. (2007). मुगल सिंहासन: भारत के महान सम्राटों की गाथा. लंदन: फीनिक्स।
18. गैस्कोइन, बी. (2003). द ग्रेट मुगलों. लंदन: हार्परकोलिन्स।
19. अतहर अली, एम. (2006). औरंगज़ेब के अधीन मुगल रईस. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
20. ब्राउन, के. (1993). मुगल साम्राज्य के पतन और पतन का इतिहास. न्यूयॉर्क: रूटलेज।
21. ट्रशके, ए. (2017). औरंगज़ेब: व्यक्ति और मिथक. स्टैनफोर्ड: स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।



INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarase@gmail.com |

www.ijarase.com